Name of the Scholar : JAINENDRA KUMAR

Name of the Supervisor : Dr. DILEEP SHAKYA

Department : Department of Hindi

Title of Thesis : NAGARJUN KI KAVITA MEIN ABHIVYAKT AAM AADMI KA SANGHARSH

ABSTRACT of the Ph.D. Thesis

नागार्जुन की कविता में अभिव्यक्ति आम आदमी का संघर्ष

आम आदमी का अर्थ 'सामान्य-जन' या फिर 'मामूली-आदमी' से लिया जाता है। ऐसा वर्ग जो अपनी सामान्य जरूरतों की पूर्ति के लिए निरन्तर संघर्ष करता रहता है। अपनी रोजमर्रा के कार्यकलापों में और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भिन्न-भिन्न समस्याओं से टकराता है। आम-आदमी अगर एक वाक्य में कहें तो वह आदमी है, जो कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में नियंता नहीं है, पर हर कार्यक्षेत्र का आधारशिला है। इस आम-आदमी के सहयोग के बिना न ही कोई राजनीति हो सकती है और न ही किसी देश की अर्थव्यवस्था चल सकती है, किन्तु इन सबके बावजूद भी यह आम-आदमी निरंतर छला जा रहा है। देश की राजनीति से लेकर खुद को समाजसेवक कहने वाले अधिकांश लोग इसी आम-आदमी के सहारे देश और समाज के सत्ता पर काबिज होते हैं और फिर इसी आम-आदमी का दोहन करते हैं। सत्ता और पैसे की चाह रखने वाले चंद मुट्ठी भर लोग देश और समाज के बहुसंख्यक वर्ग पर शासन करते हैं और जमकर शोषण भी। यह एक अत्यन्त गंभीर और विचारणीय विषय है कि लोकतंत्र जैसा शब्द अपने समूचे अर्थ में भारत जैसे देश में खुद को कितना सार्थक कर पाया है? राजनेताओं और समाज के विभिन्न वर्गों और धर्मों के ठेकेदारों ने पूरे देश को समाज को अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए कई-कई हिस्सों में बाँट दिया है। आज के समय में अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे लोगों ने सारे आदर्श, सारे नीति-नियम को दरकिनार कर दिया है, हरा दिया है।

उल्लेखनीय है कि परिस्थितियों के अनुसार रचनाकार अपने कर्म, अपने धर्म और समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को समझता है। हिन्दी कविता में आम-आदमी के संघर्ष का सीधा-सीधा स्वरूप भक्तिकाल के प्रतिनिधि संत कवि कबीर के यहाँ दिखाई देता है। उसके पहले की हिन्दी कविता में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में कहीं-कहीं बहुत कम मात्रा में कवि खुद को जनता के दु:ख-दर्द से जोड़ पाए हैं। आधुनिक काल के लगभग सभी रचनाकारों की रचनाओं में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में आम-आदमी के जीवन और उसके संघर्ष की अभिव्यक्ति को देखा जा सकता है। भारतेन्दु से लेकर वर्तमान समय में सक्रिय कवियों की कविताओं में आम-आदमी अपनी समग्रता में चित्रित हुआ है।

आम-आदमी के संघर्ष के सन्दर्भ में नागार्जुन की कविताओं का अवलोकन करते हुए यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि नागार्जुन संवेदनात्मक, भावात्मक और वैचारिक रूप से आम-आदमी के साथ जुड़े हुए हैं। उनकी कविताएँ न सिर्फ आम-आदमी के दुख-दर्द और संघर्षों को बयां करती हैं, बल्कि अपने

विचारों में भी नागार्जुन आम-आदमी के लिए गहराई से सोचते हैं। नागार्जुन की कविता और भारतीय आम-आदमी का संघर्ष परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए आगे बढ़ते हैं। नागार्जुन अपने समय में घट रही प्रत्येक घटना को अपनी कविता का विषय बनाते हैं। आजादी के बाद भारतीय जन-मन का चित्रण भी उन्होंने बखूबी किया है। नागार्जुन की एक बड़ी विशेषता यह है कि वह खुद को किसी दायरे में सीमित नहीं करते। उनकी कवि दृष्टि किसान, मजदूर से लेकर जनता के प्रतिनिधि कहे जाने वाले तक बिना किसी अवरोध के जाती है। नागार्जुन जन-साधारण के यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं। वह जहाँ कहीं भी संघर्षशील जन को देखते हैं, उसको अपनी कविता में चित्रित करते हैं। सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने वाले जन-सामान्य को चित्रित करने वाले तो बहुत कवि हुए हैं, पर उस जन-सामान्य के संघर्ष में शामिल होकर, उसके दर्द और उसके संघर्ष को महसूस कर लिखने वाले बहुत कम कवि हैं। नागार्जुन ऐसे ही कवि हैं, जो आम-आदमी के साथ उसकी धरातल पर खड़े होकर, उसके संवेदनाओं और जीवन को पहले समझते हैं और फिर कविता में उसको स्थान देते हैं। स्वाधीनता के पूर्व और बाद की लगभग सभी महत्वपूर्ण घटनाएँ नागार्जुन के यहाँ अपनी समग्रता में मौजूद हैं। सामाजिक यथार्थ का हर पहलू इनके यहाँ दिखाई देता है। इनकी तत्कालीन समाज में, तत्कालीन समय को आधार बनाकर लिखीं गईं कविताएँ भी, जिनमें आमजन की सीधे-सीधे बात हुई है, अपने विषय-वस्तु और संवेदना के कारण न सिर्फ महत्वपूर्ण बन गई, बल्कि अपने समय के पार जाकर भी हमेशा के लिए प्रासंगिक हो गई हैं।